प्रिया वर्ग, रति प्रिया वर्ग, सुरति प्रिया वर्ग, अह्लादिनी वर्ग और ऐसे ही कई - कई उपवर्गों में से एक वर्ग है **'मानिनी अप्सरा वर्ग'**। जिसमें सर्वाधिक मादक अप्सरा है **'यौवन गर्विता।'** अपने नाम के ही अनुरूप यौवन से सिर से पांव तक भीगी- भीगी, **जो कार्तिक माह से बसंत ऋतु तक अपने रूप बल की आभा से सारे शरद ऋतु को पिघलाती हुई और अपने यौवन से मदमस्त होकर, उसे देह में न संभाल कर रख पाने के कारण इस धरा पर छलकाती हुई, विचरण करती रहती है,** निखर आती है इसकी अदाओं से सारी शरद ऋतु, सम्पूर्ण शिशिर में कोई खनक और ऐसी ऊष्मा, जिससे तैर जाती है साधक की आंखों में भी मादकता की इतराती लहरें।

स्वर्णिम आभा से मंडित, तनवंगी यौवन गर्विता अपनी इकहरी और बेंत की तरह लचकती तरल देह के साथ जब अपने घने बालों को समेट और सहेज रूचि ले - लेकर शिरोभाग पर गूंथती है तो लगता है कि उसने अपनी केश राशि में सभी साधकों और योगियों के पौरुष को भी बांध, अपनी सघन केश राशि में बसाकर, अपनी मस्तक पर धारण कर लिया है, और इतरा रही है-- उनकी इस पराजय पर। वास्तव में ही सभी योगी और मुनि भी तो इसी तरह खो जाना चाहते हैं, इसकी सघन केश राशि में, जो बंधी हो कोमल ग्रीवा को चुम्बित करती हुई। आंखों की कनखियों से तीक्ष्णता से झांकती हुई पैनी नजर, लगता है उसके स्वाभिमान को भी पी गई हो और यह कम्बुग्रीविणी अपनी ग्रीवा को कुछ और उन्नत करती हुई, जब अपने क्षीण पल्लवों को कुछ और भींच कर मंद - मंद मुस्कराती हुई, हल्के से अपने क्षीण कटि को खम देकर हंसिनी की भांति इस धरा पर उतरती है, फिर तो सारे ऋषि, मुनि और उच्च कोटि के साधक भी इसकी साधना से भी अधिक, इसकी आराधना में तल्लीन हो जाते हैं। ऊंचे से ऊंचे साधकों ने भी अपने स्वाभिमान को एक ओर धर यौवन गर्विता की एक झलक मिलने के बाद, उसकी जिस तरह से अभ्यर्थना की है, वह तो साधना जगत का एक अलग रोचक विषय है और **किस - किस तरह से इस अभिमानिनी ने कौतूहल करे, अपने साधकों के साथ, और छेड़ - छेड़ कर रख दिया उनकी देह के एक - एक तार को, अपने शरारतों से और चुलबुलाहटों से, उसकी तो कोई तुलना ही नहीं।** इस

अप्सराएं तो अनेक हैं और प्रत्येक अपने आप में किसी न किसी ढंग से अनूठी ही हैं, और हो भी क्यों न, यह तो वर्ग ही विशेष है-- मदमाते यौवन का और सौन्दर्य से भरपूर तत्वों का, इसी वर्ग में हो जाते हैं कुछ भेद और कुछ सूक्ष्मताएं, जिसका ज्ञान किसी भी शास्त्र में नहीं मिलता और इन्हीं में परत दर परत में छिपा होता है उन्हें वश में कर लेने का रहस्य, गोपनीय क्रियाएं . . . .

कारण ही अनायास सुध-बुध खो बैठते हैं साधक गण, इसका स्पर्श पाकर। *क्यों कि इसी की साधना में तो छिपा है अप्सरा साधना का सम्पूर्ण रहस्य, यौवन की भरपूर मस्ती को घूंट-घूंट पी लेने का रहस्य, क्योंकि यौवन गर्विता केवल अपने यौवन से ही नहीं, यह तो गर्वित रहती हैं अपने साथ समेटे षोडश अप्सराओं के गर्व को। क्योंकि यौवन गर्विता अकेले उपस्थित होती ही नहीं,* कौतुक प्रिय यह सदैव तल्लीन रहती है अपनी सखियों के संग उल्लास, उमंग और मादकता में। यह तो साक्षात् कामदेव के धनुष पर चढ़ी, वह पुष्प बाण है, जिसकी देह दृष्टि एक लचक के साथ आकर टकराती है, साधक के देह से, और धरी रह जाती है उसकी सारी तपस्या, एक ओर। कामदेव की खिंची प्रत्यंचा के समान ही इसकी आंखों में वह भाव भरा होता है कि अब छूटा कोई कटाक्ष, अब छूटा . . . . . और साधक बेसुध होकर देखता रह जाता है, एक बाण के पश्चात छूटने वाले दूसरे बाण की प्रतीक्षा में।

छू गया जिसका भी तन और मन इसके मादक यौवन की सुनहरी चम्पई आभा से, फिर उसके जीवन में तो यौवन की चम्पई आभा बिखरती ही है, और फिर ऐसे साधक को जीवन गिड़गिड़ा कर नहीं जीना पड़ता, अपना लिया यौवन गर्विता ने जिसको फिर प्रियतमा बन कर उस पर अपनी सभी सहयोगिनियों के द्वारा रस और मस्ती की वर्षा खुद भी की है और करवाई है कि इस जगत की ओर से हट कर साधक खो जाए ऐसी दुनियां में जहां यौवन और यौवन की स्वप्निल कामनाओं के अतिरिक्त कुछ हो ही न, मन में तैरने लगे इन्द्र - धनुषी रंग, और वही रंग उतर आए जीवन में यौवन गर्विता के साथ उसकी सहयोगिनी अप्सराओं के रूप में।

अप्सरा वर्ग का सौन्दर्य, लक्ष्मी का लावण्य और सिद्धि प्रदान करने का आग्रह भरे, यह क्षीण कटि नवयौवना जब अपनी सरस और तेजस्विता भरे अलंकृत देह के साथ, जब साधक के समक्ष आती है, तो उसे इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि उर्वशी और मेनका जैसी श्रेष्ठतम कही जानी वाली अप्सराओं का गर्व भी खण्डित हो जाए। सचमुच इसकी देह पर ही इसके यौवन ने गढ़े हैं ऐसे आभूषण, जो इसे किसी अलंकरण की जरूरत रहने ही नहीं देते, और सराबोर कर देती है साधक की देह भी, अपने यौवन के प्रभाव से। ज्यों किसी अन्य अप्सरा के शरीर पर पड़े आभूषणों की चमक से दमक उठे किसी साधक की देह, वही कार्य यह कर देती है, अपने देह की मादक यौवन की आभूषणों से। **चम्पई आभा ही नहीं, चम्पई सुगन्ध भी बिखेरती हुई साधक के मन में यों हिलोर पैदा करती है कि साधक स्वयं फूलों भरी मस्ती और यौवन से लचीला बन कर बिखर जाए।** प्राप्त हो गई जो किसी साधक को इसकी साधना, वह तो फिर अन्य किसी अप्सरा की साधना करने की बात सोच भी नहीं सकता। हल्की गूंजती वह मादक ध्वनि, जो अपने - आप में कैसा आमंत्रण और गहराई भरे है। जिसे सुनने के बाद तो वीणा का स्वर भी फीका लगने लगे, और सारा तन - मन यौवन की उत्तेजना से भरा-भरा रहने लगे। साधक की भी आंखों में उतर आए उसी की तरह यौवन की शरारतें, बातों में हास्य - विनोद, और चतुराई से बातों को व्यक्त करने की एक अनोखी अदा, कि सामने वाला लाजवाब होकर रह जाए, और मुग्ध हो जाए विनोद प्रियता से। **उसकी कानों के पास कोई सफेद लट उतर आयी हो या आंखों में धुंधली सी उदासी छा रही हो और मन कुछ थक गया हो तो फिर यौवन गर्विता से बढ़कर श्रेष्ठ साधना हो ही कौन सकती है? जो केवल पुरुष साधकों के लिए ही नहीं, स्त्री साधिकाओं के लिए अनुकूल सिद्ध होती ही है।** लेकिन पुरुष वर्ग के लिए. . . . पुरुष वर्ग को तो नवजीवन से भर देने की क्रिया ही है, साक्षात् उसका कायाकल्प है उसके अन्दर १८ - २० वर्ष के युवक जैसा तोड़ - फोड़ कर देने का बल भर देने का रहस्य है, और वयस्क साधकों के साथ - साथ सन्यासी साधकों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया, तो वे इसके अचूक प्रभाव को देखकर दंग रह गए।

अप्सरा साधना के कई भेद खोलती यह विशिष्ट अप्सरा साधना ''यौवन गर्विता अप्सरा साधना'', दमखम रखने वाले मजबूत पुरुषों की प्रिय साधना, चुनौती पूर्ण साधना अपने को यौवन से कुछ और भर लेने की क्रिया. . .

प्रत्येक अप्सरा साधना का सामान्य रूप से निर्धारित दिवस होता है शुक्रवार, लेकिन इस निराली अप्सरा की तो प्रत्येक अदा ही निराली है। इसकी साधना कार्तिक माह से लेकर बसंत पंचमी तक कभी भी प्रारम्भ की जा सकती है। केवल मंगलवार और शनिवार को छोड़कर और यौवन की मस्ती में सरस इसकी देह की तरह ही यह साधना भी सम्पूर्ण रूप से रस की साधना है, यौवन की उमंगों में खो जाने की साधना है पौरुष की मदमाती उमंगों में जीवन व्यतीत करने की साधना है। वस्त्र दिशा जैसा कोई बन्धन ही नहीं इसमें और साधक पूरी मस्ती से बैठकर जब भी चाहे रात्रि के किसी भी प्रहर में कैसे भी इस साधना

को कर सकता है। वस्त्र चाहे जैसे हों लेकिन सुगन्धित एवं स्वच्छ हों, सामने स्थापित हो **षोडश अप्सरा यंत्र** और हृदय से लगा लेने की प्रतीक रूप में आपके पास हो **पीले हकीक की माला,** इसके तन की ही तरह चम्पई आभा स्पष्ट करती हुई और आपके सामने स्थापित हो **यौवन गन्धा मुद्रिका** जो कि इस साधना की सर्वाधिक आवश्यक वस्तु है, जिस प्रकार प्रत्येक अप्सरा साधना में पूजन करते हैं, उसी प्रकार इस साधना में केसर अक्षत, सुगन्धित द्रव्य, पुष्प की पंखुड़ी से पूजन करें तथा निम्न मंत्र की ११ माला अथवा संभव हो तो २१ माला मंत्र जप करें --

मंत्र -

ॐ श्रीं अप्सरायै नमः

यद्यपि इसे बसंत पंचमी तक भी आरम्भ किया जा सकता है, फिर भी यदि शीघ्रता पूर्वक आरम्भ कर बसंत पंचमी तक इस साधना को कम से कम पांच बार कर लिया जाय तो यह साधना पूर्णता से प्राप्त हो जाती है । **जब एक बार यौवन गर्विता का स्पर्श साधक को मिल जाता है, तो फिर वह अपने सिद्ध साधक को जीवन में कभी भी धोखा नहीं देती,** फिर भूल जाती है वह अपने यौवन का गर्व और लुटा देती है, अपना सब कुछ अपने सिद्ध साधक पर। इस साधना को प्रारम्भ करने के पश्चात मध्य में कदापि नहीं छोड़ना चाहिए, भले ही प्रारम्भ में एकाएक सफलता न मिलें, क्योंकि यह एक गर्वीली अप्सरा की साधना है और सिद्ध होने के पूर्व यह साधक को इसी तरह लुका - छिपी करके सताकर एक मस्ती लेना चाहती है, **और क्या इस लुकाछिपी में भी आनंद नहीं . . .**

साधना के उपरान्त यंत्र एवं माला को तो सुगन्धित पुष्प अक्षत एवं केसर की कुछ पंखुड़ियों के साथ पीले वस्त्र में बांधकर गोपनीय ढंग से किसी ऐसे स्थान पर प्रवाहित कर देना चाहिए जिससे यह किसी अन्य के हाथ न लग सके । लेकिन **यौवन गन्धा मुद्रिका** अपने दांए हाथ की किसी भी अंगुली में धारण कर लेनी चाहिए, अपने नाम के ही अनुरूप यह मुद्रिका साधक को तो यौवन गंध से भरे ही रखती है साथ ही आगामी अप्सरा साधनाओं में इसी मुद्रिका को रखकर साधना करने पर साधनाएं सिद्धिप्रद बनती हैं। ध्यान रहे कि इस मुद्रिका का स्पर्श रजस्वला स्त्री से न हो जाए। **इसी मुद्रिका पर एक विशेष प्रयोग भी है कि यदि इसी मुद्रिका को किसी स्त्री के नाम का संकल्प करके पहनें और फिर उसके सामने जाएं तो वह वशीभूत हो ही जाती है।**

(पृष्ठ ३६ का शेष भाग)

मार्तण्ड नामक औषधि का सेवन कराया। कुछ विशेष परिस्थितियों में जहां साधक किसी मनोविकार के कारण अथवा बचपन के संस्कारों के कारण उचित रूप से विकसित नहीं हो पाया हो, वहां उनका उपचार **अप्सरा दीक्षा** द्वारा भी सफलता पूर्वक किया।

साधक कुछ झिझकते हुए और कुछ लज्जाभाव से भरकर पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष आए और अपनी मानसिक व्यथा को कहा, क्योंकि नपुंसकता, शारीरिक पीड़ा से भी ज्यादा मानसिक कष्ट की स्थिति है, और उन्होंने पाया पूज्यपाद गुरुदेव से न केवल अपने अन्दर पहले जैसा ही जोश और बल , वरन अतिरिक्त रूप से उन्हें मिला, मानसिक तरोताजगी का ऐसा वातावरण जिससे फिर वे अपना बिगड़ता हुआ दाम्पत्य जीवन संभाल सके। नीम - हकीम के पास चक्कर लगाने और यौन विशेषज्ञों के जाल में फंसने से कुछ नहीं होने वाला, वाजीकरण की औषधियां भी तत्कालिक रूप से लाभ तो दे सकती हैं, लेकिन मानसिक रूप से निरंतर ऊर्जा का प्रवाह केवल दीक्षा के माध्यम से ही संभव होता है तथा पूज्यपाद गुरुदेव के तपस्यात्मक अंश से अनुप्रमाणित भावना, जब जाकर साधक के चित्त पर टकराती है, उसे उद्वेलित करती है तो वह प्रभाव उसके साथ जीवन भर चलता रहता है। पूज्यपाद गुरुदेव तो त्रिकालज्ञ हैं, सर्वज्ञ हैं उनसे अपना कष्ट , अपनी मानसिक व्यथा कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वे संक्षिप्त वार्तालाप में ही समझ जाते हैं अपने शिष्य का सारा कष्ट, और पिता की भावना तथा गुरु के करुणा के समवेत प्रभाव से उसके कष्टों का निवारण कर देते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव तो प्रखर आयुर्वेदाचार्य हैं और उनके कुछ सन्यासी शिष्यों ने जिन आश्चर्यजनक औषधियों का तथा पारद पर आधारित भस्म आदि का निर्माण किया है, पूज्यपाद गुरुदेव दीक्षा के साथ - साथ उन्हें वे सभी गोपनीय ढंग से प्रदान करते ही हैं क्योंकि उनका एक ही चिंतन है कि मेरा शिष्य सम्पूर्ण हो, प्रखर हो और इसी चिंतन से करुणासिक्त हो कर पूज्यपाद गुरुदेव का एक स्वरूप यह है जो अपनी विषय वस्तु के कारण पाठकों के समक्ष तथा उनके साधकों के भी समक्ष बहुत कम आ सका है।

. . . किंतु जो लाभ पा चुके हैं, जीवन संवार चुके हैं, पुत्र लाभ प्राप्त कर चुके हैं, उजड़ता हुआ घर पुनः बसा चुके हैं, उनसे पूछ कर देखिए, कृतज्ञता से उनकी आंखों में आंसू छलछला आते हैं . . .

जिसका ध्येय साधक को पूर्ण भौतिक आनन्द प्रदान करना है। एक अत्यंत गोपनीय, दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण प्रयोग : ऐसा प्रयोग-दिवस वर्ष में एक बार ही तो आता है।

'अप्सरा' शब्द का अर्थ ही है प्रेम, आनन्द, माधुर्य, सौन्दर्य आदि गुणों से युक्त होना । अप्सरा चाहे कोई भी हो, चाहे वह उर्वशी हो या रम्भा, सौन्दर्य और प्रेम रस की प्रतिमूर्ति होती है. . . और जहां यौवन गर्विता हो, वहां तो अन्य सभी अप्सरायें उसके दिप्-दिप् करते सौन्दर्य के समक्ष फीकी हो जाती हैं।

यौवन गर्विता अप्सरा, जो धन, वैभव, ऐश्वर्य, सम्पन्नता प्रदान करती है उस साधक को, जिसने उसे सिद्ध कर लिया हो, मंत्रबद्ध कर लिया हो। इस साधना के निम्नांकित लाभ हैं, जो इस प्रकार हैं –

१. यह अत्यन्त ही सरल साधना है, इसमें किसी प्रकार का कोई जटिल विधि-विधान नहीं है।
२. यह साधना सिद्धिप्रद एवं फलदायी है।
३. इससे साधक को किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुंचती, अपितु लाभ ही पहुंचता है।
४. इस अप्सरा साधना को सम्पन्न करने पर यौवन गर्विता जीवन भर सुन्दर एवं सौम्य रूप में साधक के वश में बनी रहती है, और साधक के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक होती है।
५. यौवन गर्विता का ध्येय ही यह होता है, कि वह साधक को समस्त भौतिक आनन्द प्रदान कर सके।

६. वह सुन्दर बन सके, एक ऐसा सौन्दर्य उसे प्राप्त हो, जिसे देखते ही सामने वाला खुद-ब-खुद खिंचा चला आये, क्योंकि इस अप्सरा साधना से उसे ऐसे ही आकर्षक, चुम्बकीय व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है।
७. उसके शरीर से रोग, जर्जरता स्वतः ही समाप्त होने लग जाती है।
८. वृद्धावस्था भी यौवनावस्था में परिवर्तित होने लगती है, ठीक उस यौवन से भरपूर शरीर ही उस साधक को प्राप्त होता है, जिसे देखकर आंखें ठहर सी जायें।
९. वह सलाहकार के रूप में साधक को निरन्तर सहयोग प्रदान करती रहती है।
१०. वह साधक को शारीरिक और मानसिक रूप से तुष्टि प्रदान करती है।
११. मुसीबत पड़ने पर वह साधक की तन-मन-धन से सेवा करती रहती है।
१२. वह दृश्य और अदृश्य दोनों ही रूपों में साधक के साथ हर क्षण बनी रहती है।

यह जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है, जहां इसे देवताओं ने सिद्ध किया, वहीं इसे योगियों, संन्यासियों आदि ने भी सिद्ध कर सफलता प्राप्त की है।

यौवन गर्विता अप्सरा का तात्पर्य है, ऐसी देव वर्ग की स्त्री, जो सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपमेय हो, न केवल चेहरे की सुन्दरता, वरन् शारीरिक सौन्दर्य, वाणी, नृत्य, संगीत, काव्य, हास्य, विनोद समस्त प्रकार के सौन्दर्य से भरपूर हो. . . और फिर ऐसा सौन्दर्य, जो असमय बूढ़े पड़ गये मन को यौवन से भर दे, एक नयी ताजगी, तरंग, उल्लास, उमंग का उसके जीवन में संचार कर दे।

पुरुष अपने पौरुष को प्रकट करने और स्त्रियां अपने सौन्दर्य को प्रस्फुटित करने के लिए क्या कुछ नहीं करतीं, ब्यूटी पार्लर में जाती हैं, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक सभी प्रकार की दवाओं का सेवन कर अपने सौन्दर्य को निखारने का प्रयास करती हैं, किन्तु इससे वनावटी और नकली सौन्दर्य ही प्राप्त होता है, और वह कुछ समय तक ही रहता है, इसीलिए अप्सरा साधना ही वह दिव्य और वास्तविक सौन्दर्य प्रदान करने में सहायक होती है, जिसे सिद्ध कर लेने पर साधक को अर्थात् स्त्री व पुरुष को कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

अप्सरा साधना करना जीवन का परम सौभाग्य माना जाता है। हमारे विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि श्रेष्ठ ऋषियों ने भी इस साधना की महत्ता और दिव्यता को प्रतिपादित किया और इससे सम्यक् लाभ अपने जीवन में उठाने का प्रयत्न किया।

हकीकत में देखा जाय, तो सम्पूर्ण प्रकृति के सौन्दर्य को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है, उसे 'नारी सौन्दर्य' कहते हैं, अतः यौवन गर्विता अप्सरा अत्यधिक सुंदर, तेजस्वी और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जो अत्यंत नाजुक, कमनीय और षोडश वर्षीया युवती के रूप में साधक के सामने वनी-ठनी रहती है।

सुन्दर मांसल शरीर, अत्यन्त उन्नत वक्षस्थल, काले, घने, लम्बे बालों का सौन्दर्य, बोलती हुई आंखों का जादू, मन को मुग्ध कर देने वाली मुस्कान, हृदय को छू लेने वाली शैली, दिल को गुदगुदा देने वाला अंदाज. . . सभी कुछ तो है उसमें, अपने-आप में पूर्ण यौवन के भार से लदी हुई, जिसे देखकर कोई वच नहीं सकता, उसके शरीर से प्रवाहित होती दिव्य गंध से देवता भी आकर्षित होते रहते हैं।

यौवन गर्विता सम्पूर्ण गुणों से युक्त सम्पूर्ण सौन्दर्य को अपने-आप में समेटे एक ऐसी अप्सरा है, जो साधक को हर पल-हर क्षण आनन्दित करती रहती है, कभी अपने सौन्दर्य के माध्यम से, तो कभी अपने भावों के माध्यम से, तो कभी अपने कार्यों व गुणों के माध्यम से, क्योंकि इसका ध्येय ही है साधक को पूर्ण आनन्द प्रदान करना।

सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित, चिरयौवना, जो प्रेमिका या प्रिया के रूप में साधक के समक्ष रहती ही है, यदि इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सिद्ध कर लिया जाय तो।

"यौवन गर्विता अप्सरा साधना" स्त्री और पुरुष दोनों में से कोई भी कर सकता है, क्योंकि जितनी यह पुरुष वर्ग के लिए लाभदायी है, उतनी ही यह स्त्री वर्ग के लिए भी श्रेष्ठ साधना है, अतः साधक या साधिका कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर पूर्ण भौतिक आनन्द प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

साधना विधि :

१. **अप्सरा यंत्र, यौवन गर्विता माला** तथा **सौन्दर्य गुटिका** पहले से ही मंगवा कर रख लें।
२. इस साधना का विशिष्ट मुहूर्त **७ अगस्त पवित्रा एकादशी है ८.३५ से ११.०० बजे के मध्य या किसी भी शुक्रवार के दिन**।
३. यह **दो दिवसीय रात्रिकालीन साधना** है।
४. इस अप्सरा साधना से पूर्व उस स्थान को, जहां साधना करनी हो शुद्ध, स्वच्छ कर, सुगन्धित अगरबत्ती एवं इत्र आदि से उसे सुखद बना लेना चाहिए और स्वयं भी सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र धारण कर लें।
५. **पूर्व दिशा** की ओर मुख करें।
६. सुन्दर, स्वच्छ **गुलाबी आसन** पर बैठें।
७. अपने सामने एक चौकी पर भी नया गुलाबी आसन बिछा लें।
८. फिर उसके मध्य में, गुलाब की पंखुड़ियों के बीच में "अप्सरा यंत्र" को स्थापित कर दें तथा केसर, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें।
९. उपरोक्त गुटिका को भी यंत्र के दायें भाग में चौकी पर स्थापित करें।
१०. सर्वप्रथम **गुरु-पूजन** सम्पन्न कर साधक इस साधना की सफलता हेतु प्रार्थना करें।
११. इसके पश्चात् एक गुलाब का पुष्प यंत्र के सामने रखकर यौवन गर्विता अप्सरा का निम्न मंत्र पढ़कर आह्वान करें—

छलछलाहट और उमंग से मदमस्त कर देने वाली, अपने सौन्दर्य से साधक को चकाचौंध करने वाली तथा ऐश्वर्य, धन, वैभव, मान-प्रतिष्ठा और समस्त भौतिक सुखों को प्रदान कर पूर्ण आरोग्य प्राप्ति की आधारभूता. . .

**आवाहयामि भो! दीप्ते पूर्ण यौवन संस्तुते।
ममाभीष्ट प्रदानाय त्वरितमायाहि रंजिते।।**

अर्थात् "हे यौवन से परिपूर्ण दीप्तियुक्त रंजिते! मुझे अभीष्ट प्रदान करने के लिए शीघ्र उपस्थित हों।"

१२. इसके पश्चात् दो मिनट तक मौन रहकर, अपना ध्यान एकाग्र कर, शांतचित्त हो मन ही मन अत्यंत दिव्य सौन्दर्य युक्त नारी छवि को अपने मन में उतारने का प्रयास करें।
१३. फिर निम्न मंत्र का "यौवन गर्विता माला" से **११ माला मंत्र-जप** करें—

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं अप्सरायै ह्रीं श्रीं

१४. मंत्र-जप के पश्चात् दूसरे दिन भी इसी विधि से साधना सम्पन्न करें।
१५. अंतिम दिन जप आरम्भ करने से पूर्व गुलाब की एक माला पहले से ही लाकर रख लें।
१६. मंत्र-जप पूरा होने के बाद यंत्र पर उस माला से उपरोक्त मंत्र का एक माला जप ५ दिन तक करते रहें तथा सातवें दिन समस्त सामग्री— यंत्र, गुटिका एवं माला को किसी नदी, कुएं या तालाब में प्रवाहित कर दें।

पन्द्रह दिन बाद से ही साधक को यौवन गर्विता की उपस्थिति का आभास स्वतः ही होने लगेगा। यह साधना सुपरीक्षित है, अनेक साधकों ने इससे लाभ उठाया है, अतः पूर्ण मनोयोग से साधना करने पर अवश्य ही साधक की मनोकामना पूर्ण होती है, तथा उसे अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखने लगता है। यह सौभाग्य की बात है, कि इस तरह की साधना पत्रिका में प्रकाशित होती है, जिसका सभी गृहस्थ साधकों को भौतिक जगत् में पूर्णतया उन्नति और सफलता प्राप्ति हेतु लाभ उठाना ही चाहिए।

सामग्री न्यौछावर — अप्सरा यंत्र - २४०/-, यौवन गर्विता माला - १७५/-, सौन्दर्य गुटिका - १०१/-